8

एक सम्माननीय प्रतिष्ठा

(2 कुरिन्थियों 8:1-9:15)

''हम इस बात में चौकस रहते हैं, कि इस उदारता के काम के विषय में जिस की सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए'' (8:20)।

आज स्थानीय मण्डली के जीवन में कलीसिया के वित्तों की कोई भी परिचर्चा में दो सम्भावित उत्तरों में से एक मिलना सम्भव है। एक उत्तर में हमें उस पर जो धन के लिए कलीसिया की निरंतर विनतियां माना जाता है, नाराज़गी सुनाई दे सकती है। दूसरा उत्तर नाराज़गी से अधिक उकताहट को दर्शाता है। इस विचार के अनुसार बजट की कोई भी सार्वजनिक परिचर्चा ऐसी चीज़ है जिससे बचना चाहिए और कलीसिया के अधिक महत्वपूर्ण कामों में अनावश्यक घुसपैठ। कलीसिया के वित्त की किसी भी चर्चा के लिए दोनों प्रतिक्रियाओं के पीछे एक अनकही मान्यता है कि जहां तक हो सके कलीसिया के वित्तीय समपर्ण उनके लिए जो ऐसे धन और बजट जैसे सांसारिक मामलों में दिलचस्पी लेने वालों के लिए हानि रहित मोड़ है। इस विचार के अनुसार धन और बजट का कलीसिया की सेवकाई से कोई लेना-देना नहीं है।

2 कुरिन्थियों, अर्थात पौलुस की सेवकोई के बचाव के लिए मुख्य रूप में समर्पित पत्री में चन्दे पर दो अध्याय हैं। चन्दा स्पष्टतया पौलुस की पूरी सेवकाई कि सबसे आवश्यक समर्पणों में से एक था। अपनी सेवकाई के आरम्भ में उसने यरूशलेम के मसीह लोगों में पाए जाने वाले निर्धनों के लिए धन इकट्ठा करने के लिए अपने आप को दिया था (गलातियों 2:10)। फिर उसने कुरिन्थियों के नाम अपने पहले पत्र में संक्षेप में चंदे की बात की (16:1, 2)। बाद में अपने जीवन के मोड़ में रोमियों के नाम पत्र लिखते समय (रोमियों 15:22-29) कई साल बीत चुके थे। और चंदा अभी यरूशलेम में नहीं दिया गया था परन्तु पौलुस ने इसे देने की बात छोड़ी नहीं थी क्योंकि उसके जीवन के मुख्य कार्यों में से एक था। वह यरूशलेम में चंदा लाने में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा भी दाव पर लगाने को तैयार था।

वह चंदा इकट्ठा करने में जिसमें उसकी दिलचस्पी थी पौलुस को कई साल लग गए। स्पष्टतया अकाल राहत से कहीं बढ़कर थी। अन्यजाति कलीसियाओं की ओर यहूदी कलीसियाओं के लाभ के लिए आने वाला धन कलीसिया की एकता को दर्शाने के लिए था। यह कलीसियाओं के बलिदान, प्रेम और प्राथमिकताओं को दर्शाता था। पौलुस किसी भी प्रकार से धन की बात करने से हिचकिचाता नहीं था, क्योंकि उसे मालूम था कि धन हमें यानी हमारे परिश्रम और प्रेम को दिखाता है। अपने धन को खर्च करने का ढंग इस बात का संकेत हैं कि हमारे लिए जीवन

में चीज़ों का क्या महत्व है। यदि अन्य जाति कलीसियाएं यरूशलेम की घरेलू कलीसियाओं के लिए बलिदान कर सकती हैं तो वे उनकी भलाई की चिंता का स्पष्ट संदेश भेज रही हैं।

2 कुरिन्थियों में आर्थिक सहायता के लिए ज़ोरदार अपील विशेषतया ध्यान देने योग्य हैं क्योंकि पुस्तक का अधिकतर भाग यह सुझाव देता है कि पौलुस की निष्ठा पर सवाल किया जाता है। कइयों ने इसे संदेहास्पद माना था कि पौलुस ने कुरिन्थियों से अपने काम के लिए धन स्वीकार किया है (11:7-11)। उसने कुरिन्थियों पर बोझ डालने के बजाय अन्य कलीसियाओं पर ज़रूरत के सयम निर्भर होना स्वयं चुना था (11:9)। तौ भी उसके लिए धन की बात करने का एक समय आया। पहली अपील किए जाने के बाद एक साल बीत चुका था (8:10)। अध्याय 8 और 9 में वह अपने लिए अपील नहीं करता परन्तु अपने जीवन के बड़े कार्य के लिए करता है। शायद अब वह विषय में लौट आता है क्योंकि उसे विश्वास हो जाता है कि उसके लिए भरोसा बहाल हो गया है कि वह कुरिन्थियों से धन मांग सके। चंदा, उगाही और हिसाब रखना यह ऐसे चीज़ें हैं जिन्हें हम आमतौर पर उकताने वाले और अनावश्यक मानते हैं पर उसकी सेवकाई के लिए आवश्यक थे।

आदर्श कलीसिया (8:1-6)

आमतौर पर हमें उपयुक्त नमूने रखने का लाभ मिलता है। मसीही लोग कई बार मसीही सेवकाई के नमूनों के रूप सेवा करते हैं और सेवा के अर्थ को गम्भीरता देते हैं। इसी प्रकार से पूरी मण्डली प्रामाणिक सेवा की चुनौती दे सकती है। यह हमें दिखा सकती है कि हमारे लिए कौन सी सेवकाइयां सम्भव है और हमें बेहतर सेवा के लिए उत्तेजित कर सकती है। 8:1-6 में मकिदुनिया की कलीसिया कुरिन्थियों के लिए (तुलना रोमियों 15:26) उदारता का नमूना है (8:2)। दूसरी हर कलीसिया की तरह उन्होंने ''दुख की परीक्षा'' को झेला था (तुलना 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:14)। मकदुनियों को जिस बात ने अलग किया वह यह थी कि उन्होंने परीक्षा शानदार ढंग से पास की थी।

मकिदुनिया की कलीसिया भी समकालीन मण्डली के लिए उपयुक्त नमूना देती है। हम उनके समर्पण ''उन के बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उन की उदारता बहुत बढ़'' (8:2) जाने पर सबसे प्रभावित होते हैं, उन्होंने ''सामर्थ से भी बाहर मन से दिया'' (8:3)। हम जो इस पर चकित होते हैं कि उदारता से देने के लिए किसी समृद्ध कलीसिया को कैसे प्रेरित किया जाए। अपने भारी कंगालपन में उदारता से देने वाली मण्डली पर स्वाभाविक रूप से चकित होते हैं। कुछ लोगों का सुझाव है कि मकिदुनिया के मसीही लोगों की निर्धनता, उनके मसीही वचबद्धता का परिणाम था। उस बात में जो तर्कसंगत रूप में समृद्ध थी, वे निर्धन थे। संभतवया अपने मसीही समर्पण के कारण उनमें से कइयों की नौकरी चली गई होगी और कइयों के आमदन के साधन जाते रहे होंगे। तौ भी वे देने में उदार थे।

''उदारता'' (*haplotes*, 8:2) के लिए पौलुस के शब्द का अर्थ मूलतया ''सीधाई'' है। यह शब्द उसके ''मन की सीधाई'' का सुझाव देता है जिसका उद्देश्य मिला-जुला न हो (कुलुस्सियों 3:22; इफिसियों 6:5)। धन देने के लिए इस्तेमाल किए जाने पर यह उसकी ''उदारता'' का सुझाव देता है जो केवल एक प्राथमिकता को समझता है (रोमियों 12:8)। यह

शब्द संकेत दता है कि मकिदुनी लोग अपने भारी कंगालपन से उदारता से क्यों दे पाए: उनके ''मन की सीधाई'' का अर्थ है कि उनकी प्राथमिकताएं बंटी नहीं थीं। उनके समर्पण कलीसिया के काम और अन्य कामों में बंटे नहीं थे। उनका धन देना उनके जीवनों की प्राथमिकता की झलक देता था। इस कारण मकिदुनी लोग हमारे लिए आदर्श हैं और यह याद दिलाने वाले कि उदारता से देना लक्ष्य को मन में रखकर ही बढ़ सकता है। जिनका ध्यान हर नये भौतिक लाभ के साथ बने रहने और मसीही के कार्य के लिए अपने समर्पण में बंट जाता है, उन्हें उदारता से देना असंभव लगेगा, चाहे वे कितने भी समृद्ध न हों। ''मन की सीधाई'' से देने वाले लोग अपने कंगालपन में भी देंगे।

मुझे लगता है कि हमारा जोश पूर्ण ढंग से न दे पाना इस तथ्य के कारण है कि हम बजटों, कार्यक्रमों, कर्ज में डूबे होने और वित्तीय दायित्वों की बात ऐसे करते हैं जैसे हम किसी वित्तीय सौदे की बात कर रहे हों। इस भाषा से हमें कलीसिया के वित्तों को ''वचन से बाहर'' मामलों के रूप में विचार करने लगते हैं। इस पर हम आरंभिक कलीसिया से कीमती सबक सीख सकते हैं, क्योंकि आरंभिक मसीही अपने चंदा देने को बताने के लिए कभी सामान्य वित्तीय भाषा का इस्तेमाल नहीं करते थे। ये विशेषकर प्रभावशाली है कि मकिदुनियों ने ''पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने की विनती की'' (8:4)। NIV में इस आयत का अनुवाद ''पवित्र लोगों की इस सेवा में साझी होने का सौभाग्य'' हुआ है। चंदा केवल वित्तीय जिम्मेदारी नहीं थी बल्कि इसमें ''पवित्र लोगों की सेवा'' शामिल थी। अनुवादित शब्द ''सहायता'' या ''सेवा'' (NIV; NEB) का यूनानी शब्द *diakoniat* है, जिसका इस्तेमाल नये नियम में आम तौर पर ''सेवकाई'' के लिए हुआ है।

''सेवकाई'' (*diakonia*) नये नियम में एक महत्वपूर्ण शब्द था। मूल में यह शब्द आत्मलज्जा के कार्य के लिए अर्थात मेज पर प्रतीक्षा करने और भोजन खिलाने के लिए था। इसमें अपने स्वामी के लिए जीने वाले घरेलू नौकर की तरह दूसरों के लिए जीना शामिल है। यीशु ने दूसरों के सेवक के रूप में आकर (मत्ती 20:28) और यह मांग करके कि उसके चेले एक-दूसरे की सेवा करें (लूका 22:26) इस शब्द को सम्मान दे दिया। उसके चेलों की पहचान *diakonia* अर्थात एक-दूसरे को बनाने की निस्वार्थ सेवकाई होना था। सेवकाई दूसरों की प्रेम पूर्वक सेवा है (तुलना 1 कुरिन्थियों 16:15; इब्रानियों 6:10; फिलेमोन 13; 2 तीमुथियुस 1:18)।

नये नियम के अनुसार सेवकाई के कई ढंग हैं। ''सेवकाई का काम'' पूरी कलीसिया का काम है (इफिसियों 4:12)। पौलुस कहता है, ''सेवा कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है'' (1 कुरिन्थियों 12:5)। एक महत्वपूर्ण सेवकाई धन का योगदान है। जब मकिदुनियों ने यरूशलेम की सहायता करने में भाग लेना चाहा, तो उन्होंने इसमें एक सेवकाई को देखा जो कलीसिया को बनाएगी। जब पौलुस ने यरूशलेम के लिए चंदा लिया तो वह पवित्र लोगों की सेवा के लिए गया (रोमियों 15:25)। सेवकाई के कई रूप हैं जिनमें हम दिखाते हैं कि हम अपने लिए नहीं जीते (5:15)। चंदा उन कई ढंगों में से एक होना चाहिए, जिन्हें हम दिखाते हैं कि हमने अपने आप मकिदुनियों की तरह अपने आप को प्रभु को दे दिया है (8:5)।

यदि हम चंदा देने में सहभागिता करके ''सेवकाई कर रहे'' हैं तो कलीसिया के लिए इस तथ्य को नज़र अंदाज न करने का कारण है कि हर सेवकाई किसी न किसी प्रकार दूसरों की

सेवा के लिए है। हम किसी प्रकार के नये कीर्तिमान स्थापित करने या अपने स्मरण चिह्न बनवाने के लिए योगदान नहीं देते। हर सेवकाई उसके काम को आगे बढ़ाने की मंशा से है जिसने दूसरों के लिए अपने आप को दे दिया। हम में से कइयों को इस बात की समझ है कि हमारी अनिवार्य सवेकाइयां आपदा राहत के लिए विशेष योगदान के लिए, हमारे बच्चों को सिखाने के लिए सामग्री और स्टाफ के लिए और मिशनरी कार्य के लिए ''अपने आप को देने'' के हमारे समर्पण से आरंभ होती हैं। मकिदुनियों की तरह हमारे पास न केवल कार्यक्रमों, कमेटियों और बजट की रिपोर्टों में भाग लेने बल्कि रोमांचकारी सेवकाइयों में भाग लेने की संभावना भी है।

प्रेम का प्रमाण (8:7-15)

मकिदुनियों ने यह दिखाकर कि उन्होंने अपने आप को प्रभु को दे दिया है (8:5) अपनी परीक्षा पास कर ली थी (तुलना 8:2)। पौलुस अब कुरिन्थियों की ओर उनके प्रेम का ''प्रमाण'' देने को मुड़ता है (तुलना 8:7, 8) । जैसा NIV में लिखा ''मैं तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को दूसरों की ईमानदारी से तुलना करके परखना चाहता हूं।'' गहरी श्रद्धा और लगाव का दावा करना ही काफी नहीं होता क्योंकि प्रेम की परख हमेशा दूसरों के लिए बलिदान करने की हमारी इच्छा से होती है। यह कपट पूर्ण हो सकता है (रोमियों 12:9)। पौलुस ने अपनी कई फेरियों, पत्रों और रातों की नींदे उड़ने में कुरिन्थियों के लिए अपने प्रेम को पहले ही दिखा दिया था (तुलना 2:4; 6:6)। मसीह ने हमें धनी बनाने के लिए ''हमारी खातिर'' अपनी संपत्ति त्याग कर अपने प्रेम को दिखा दिया था (8:9)। सच्चा प्रेम दूसरों की सेवा करने के वास्तविक कामों के दिखाई देता है। इसी कारण पौलुस कहता है, ''सो अपना प्रेम और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है कलीसियाओं के सामने उन्हें सिद्ध करके दिखाओ'' (8:24)। कलीसिया के लिए सेवकाई के लिए अच्छा नमूना होना अच्छा है, जैसे कुरिन्थियों के पास मकिदुनियों का नमूना था। परन्तु कई बार प्रदर्शन के द्वारा कि हमारा प्रेम कपट पूर्ण नहीं है नमूना बना जाता है।

जब हम कुरिन्थियों को दी गई पौलुस की चेतावनी को पढ़ते हैं तो हम अपने आपको उनसे मिला सकते हैं। हम में से कई लोगों ने प्रेम पूर्वक सेवा में दूसरों के लिए अपने आपको खाली करके मकिदुनियों की तरह ''परीक्षा पास'' नहीं की है। अपनी कई बहसों के दौरान कुरिन्थियों को यह साबित करने की चुनौती दी जा रही थी कि वे कलीसिया के उद्देश्य को याद रखें। सदियों से बहुत कम कलीसियाएं इतनी महान रही हैं जिन्होंने यह याद रखा कि उनका काम दूसरों की खातिर ''निर्धन बनने'' के यीशु के नमूने का पालन करना है। लोगों की तरह कलीसियाएं भी ''अपने लिए नाम कमाने'' और शक्ति और प्रभाव के इस्तेमाल के प्रलोभन में पड़ती हैं। कई बार कलीसिया सामाजिक क्लब से मिलती-जुलती होती है, जो केवल मनोरंजन करने और अपने लोगों को सुविधाजनक स्थान देने के लिए होती है। कुरिन्थियों की तरह हमारे सामने भी वह परीक्षा है जिसे कई कलीसियाएं पास नहीं कर पाईं। हम इस परीक्षा को तभी पास करते हैं जब हम दूसरों के लिए प्रेम पूर्वक की गई उस सेवा को जो हमारी खातिर ''निर्धन बनकर'' यीशु ने दिखाई, मण्डली के अपने जीवन में दोहराते हैं।

किसी प्रकार की आलोचना से बचने के लिए (8:17-24)

जो लोग चंदा मांगते हैं स्वाभाविक ही वे शक के घेरे में आ जाते है कि वे अपने आप को धनवान बनाने के लिए दूसरों के बलिदान पूर्वक किए गए दानों का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। इस शक को बढ़ावा आम तौर पर धार्मिक संगठनों में पाए जाने वाले घोटालों से मिलता है। मीडिया में आम तौर पर धार्मिक कर-मुक्त संगठनों की खबरें होती हैं, जो फंड इकट्ठा करने के अति बनावटी ढंग अपनाते हैं। फिर उस आमदनी का बड़ा भाग और फंड इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कई घटनाओं में ऐसा लगता है कि संगठनों का अस्तित्व फंड इकट्ठा करने के अलावा और किसी काम का नहीं है। सेवा के किसी भी काम से बढ़कर धन इकट्ठा करने के लिए और धन खर्च किया जाता है।

वास्तविक सेवकाई नकली होने के शक से बच नहीं सकती। पौलुस उन संदेहों से पूरी तरह सचेत है जिसे यह ''उदारता का काम'' (8:20) बढ़ाएगा। सरसरी देखने वाला किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसकी निष्ठा पर पहले ही संदेह किया जाता है, कुछ न कहने के लिए कैसे कह सकता है कि पौलुस की सेवकाई वास्तविक थी? धन के प्रबन्ध में अपनी निष्ठा जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर वह कोई जोखिम उठाता प्रतीत नहीं होता। वह धन का प्रबन्ध अकेले नहीं करता। वह तीतुस को भेजता है जिसकी वचन बद्धता कुरिन्थियों में कठिन परिस्थितियों में पहले ही दिखाई जा चुकी है (7:5-16)। तीतुस के साथ वह व्यक्ति है जिसकी पहचान अपने प्रचार के कारण उस भाई के रूप में थी, ''जिस का नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में फैला हुआ है'' (8:18)। इस भाई की विश्वसनीयता का संकेत इस बात से मिलता है कि उसे विशेष रूप से उन कलीसियाओं द्वारा ठहराया गया था जिन्होंने उसमें अपना भरोसा जताया था। एक तीसरे साथी की पहचान केवल ''अपने भाई'' के रूप में हुई है (8:22)। उसे भी ''बार-बार परख के बहुत बातों में उत्साही पाया'' गया। यह सभी लोग ''कलीसियाओं के भेजे हुए'' (8:23) अर्थात वे लोग थे जिनकी निष्ठा पर कभी सवाल नहीं किया गया।

8:20, 21 में पौलुस बताता है कि कलीसिया के धन के प्रबन्ध में उसने इतनी विस्तृत सावधानियां क्यों बरतीं। NIV में उसके शब्दों का अनुवाद, ''उदारता के इस दान के प्रबन्ध कें ढंग में हम किसी भी प्रकार की आलोचना से बचना चाहते हैं'' (8:20)। पौलुस को मालूम था कि निष्ठा के साथ काम करने के लिए प्रामाणिक सेवक होना ही काफी नहीं है बल्कि उसे अपनी निष्ठा पर किसी प्रकार का संदेह नहीं रहने देना चाहिए (तुलना 8:21)। ऐसी ही भाषा में 6:3 में उसने कहा, ''हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।'' 8:19, 20 में में पौलुस इस बात को समझता है कि उसकी सेवकाई के धन का प्रबन्ध शामिल है। वास्तव में दोनों आयतों में इस्तेमाल क्रिया *diakoneo* (''सेवक'') का इस्तेमाल हुआ है जहां NIV में इसका अनुवाद ''प्रबन्ध करना'' किया गया है। पूरी कलीसिया सेवकाई में भाग ले सकती है, परन्तु कइयों को चन्दा इकट्ठा करने और फंडों को बांटने की सेवकाई मिली है।

कलीसिया को पौलुस की बात की वैद्यता को समझने की आवश्यकता है कि ''हमारा लक्ष्य वह है जो न केवल प्रभु की दृष्टि में बल्कि मनुष्यों की दृष्टि में भी आदरणीय है'' (तुलना नीतिवचन 3:4)। हम पर जो दूसरों को उदार योगदान के द्वारा ''अपने आप को देने'' का आग्रह करते हैं, धन का प्रबन्ध करने और चन्दा इकट्ठा करने और इसे बांटने वालों और अपने ढंगों

के कौशल और उनकी निष्ठा पर किसी भी संदेह न करने की जिम्मेदारी है। जिस कलीसिया का नाम फंडों का प्रबन्ध गैर-जिम्मेदारी से करने के कारण है, वह ऐसा अनिष्ठावाद खड़ा करती है, जो उदारता से देने के जज्बे को खत्म कर देता है। जो कलीसिया दूसरों के धन को लापरवाही से खर्च करती है, वह देने की सेवकाई में शामिल होने की इच्छा को भी खत्म करती है। इसलिए हिसाब किताब रखने के योग्य लोगों के लिए, कलीसिया के हिसाब-किताब रखने के ढंग और धन के इस्तेमाल के ढंग की दूसरों को जानकारी देने में सुधार करके एक उचित सेवकाई है। कलीसिया के काम को आत्मिक और भौतिक पक्षों में बांटकर हम अपने विश्वास के एक महत्वपूर्ण पहलू को अनदेखा करते हैं पौलुस ने धन का प्रबन्ध करने में अपने आप को ''सेवक'' के रूप में देखा। सही सेवकाई लापरवाही से बचती है जो इसकी समझदारी और ईमानदारी पर संदेह का कारण बने।

यह सार्वजनिक सेवा (9:1-12)

जोश भरी शुरुआत के बाद असफल हो जाने वाली सेवकाई हमारे उत्साह को कम कर सकती है। ऐसी असफलता उन परिस्थितियों और उन मुद्दों से हो सकती है जो हमारे लिए उस सेवकाई से जिसकी हमने योजना बनाई है अधिक महत्वपूर्ण लगते हों। चंदे में कुरिन्थियों की भूमिका उस ढंग का उदारहण है, जिसमें सही सेवकाइयों को कुछ देर के लिए अनदेखा किया जा सकता है। दो घटनाओं में पौलुस अपने पाठकों को याद दिलाता है कि उसकी विशेष सेवकाई एक साल की प्रतीक्षा के बाद भी अधूरी है (8:10; 9:2)। वह उन्हें याद दिलाता है कि बड़ी-बड़ी योजनाएं होना ही काफी नहीं है बल्कि बनाई गई योजनाओं को अमल में लाना बड़ा काम है। वह कहता है, ''जैसा इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो'' (8:11)। कई कलीसियाओं ने बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाई हैं पर पूरा करने तक कुछ ही कलीसियाएं पहुंची।

पुराने कार्यक्रमों के प्रति वचनबद्ध बने रहने से नये कार्यक्रमों के सपने देखना आसान है। जब हम नये कार्यक्रमों के बारे में समझाते हैं तो हमें चमचमाते शब्दों में जो सम्भव हो उनका व्याख्यान करना आसान लगता है। परन्तु जब हम पुरानी सेवकाई के लिए वचन बद्धता की मांग करते हैं तो पौलुस के साथ हमें कहना चाहिए, ''उस सेवा के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए की जाती है, मुझे तुम को लिखना अवश्य नहीं'' (9:1)। इस आयत का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है, ''तुम्हें लिखते जाना अनावश्यक'' है। सेवकाई (*diakonia*, 9:1) जिसके बारे में पहले बताया गया है, कोई नई नहीं है।

ऐसी सेवकाई को जिसकी नवीनता खो चुकी हो, हम कैसे बनाए रखते हैं? मुझे लगता है कि कुरिन्थियों को लिखते हुए पौलुस को यह डर है कि वे उसे दूसरी कलीसियाओं के सामने परेशान करेंगे। एक साल के बाद कार्यक्रम में अब विशेष आवश्यकता पड़ी है (9:4)। वह उन्हें यह याद दिलाते हुए कि चंदा एक ''सेवकाई'' या ''सेवा'' है, प्रोत्साहित करना आरम्भ करता है। फिर वह मसीही लोगों को (9:1)। फिर वह कुरिन्थियों को यह बताने के लिए आगे बढ़ता है कि इस सेवकाई में उनके पिछले समर्पण में पहले से ही मकिदुनिया के लोगों को ''हिला दिया'' था। मकदुनिया की कलीसिया, जो इस बलिदान पूर्वक सेवकाई का बड़ा नमूना थी (8:1-7)

मूल में स्वयं कुरिन्थियों के उदाहरण से ''प्रभावित हुए'' थे (9:1-5)! कलीसियाएं एक दूसरे से सीखती हैं। मण्डली के जीवन में अलग-अलग समयों में अच्छे उदाहरण बनने और अच्छे उदाहरण का अनुसार करने के बीच बदल हो सकते हैं। यीशु द्वारा जीवन के ढंग के रूप में सेवा का उदाहरण दिए जाने के समय से ही हम एक दूसरे से सीखते हैं।

सेवकाइयां एक अच्छे स्मरण से बढ़ती हैं। स्मरण हमें हमारे उस अच्छे प्रभाव को याद दिला सकता है जो किसी समय हमारा था। हम याद करते हैं कि हमारे नमूने से दूसरों को प्रोत्साहन मिलता था। इसलिए किसी ऐसी सेवकाई पर छोड़ देना जिसमें हम कभी नेत्रित्व देते थे, उत्साह भंग करना हो सकता है।

मकिदुनिया के लोग अब कुरिन्थियों के लिए नमूना हैं। 8:2 में पौलुस ने उनकी अत्याधिक उदारता का वर्णन किया है। वही शब्द जिसका अर्थ ''एकमात्र उद्देश्य'' (*haplotes*) है अब 9:11, 13 में कुरिन्थियों को की गई अपीलों में लागू किया गया है, जहां इसका अनुवाद ''उदारता'' हुआ है। यह तो ऐसा है जैसे पौलुस ने कहा हो, ''उस सेवा के लिए जो मकिदुनियों दे दिखाई थी अब अपनी लगन को दिखाने का समय तुम्हारा है।'' सेवा के इस कार्य में उनकी यह भाग्यदारी यह संकेत भेजने में थे कि उनकी प्राथमिकताएं दृढ़ता से बनी हुई हैं। हर्ष से देने पर ज़ोर (9:7) हमें उस व्यक्ति के जीवन में आनन्द का स्मरण कराता है जिसने यीशु के दृष्टांत वाले खेत को खरीदने के लिए अपना सब कुछ बेच दिया (मत्ती 13:44)। हम ''थोड़ा देते'' (9:6) हैं जब हमारी प्राथमिकताएं दृढ़ नहीं होती। जब हम एक चित्त हों तो हम हर्ष से देने वाले बन सकते हैं (9:7)।

इस समझ से बढ़कर स्पष्ट रूप में कोई बात उदारता से देने को नहीं उकसाती कि हमारा बलिदान का शुभ उद्देश्य है। चंदा इकट्ठा करने के सम्बन्ध में पौलुस की शब्दावली इसके वास्तविक उद्देश्य पर कोई संदेह नहीं रहने देती। 9:12 में ''इस सेवा के पूरा करने'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल चंदे के विवरण के लिए किया गया है (*diakonia tes leitourgias*)। दोनों शब्द व्यवहारिक रूप में एक स्थान हैं और वे हमें याद दिलाते हैं कि पौलुस के मन में चंदे का क्या स्थान था। *Diakonia* का इस्तेमाल धन के साथ सेवकाई सहित दूसरों के लिए सब सेवकाई के लिए किया जाता था। *Leitourgia* का इस्तेमाल विशेषकर सार्वजनिक सेवा के लिए किया गया जाता था। रोमियों 15:27 में इसका इस्तेमाल उनके लिए किया गया जो चंदे में ''सेवा'' करने वाले थे। फिलिप्पियों 2:30 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ जहां पौलुस कहता है कि इपफ्रुदीतुस ने अपनी जान जोखिम में डाल दी ''ताकि तुम्हारी ओर से मेरी सेवा को पूरी करने के लिए मेरी सेवा को पूरा करे।''

देने वाले के लिए प्रतिज्ञा (9:12-14)

देने की इस सेवकाई का परिणाम क्या होगा? हम इस सेवकाई को सफलता के किसी चिह्न के बिना खत्म नहीं होने देना चाहते। जब हम देने और उचित सेवकाइयों के सामने आने वाली कई चुनौतियों जिन में हम भाग लेना चाहते हैं, पर विचार करते हैं तो हमें यह यादि दिलाया जाना आवश्यक है कि हमारे संसाधन इतने कम हैं कि उन से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। हमारी मण्डली के थोड़े से संसाधन पूरे देश में सुसमाचार का प्रचार नहीं कर सकते। कुरिन्थियों ने

यरूशलेम की सेवा पर अपने थोड़े से योगदान से होने वाले असर पर ऐसे ही सवाल पूछे होंगे। पौलुस इन संदेहों का उत्तर यह याद दिलाते हुए देता है कि परमेश्वर हमारे संसाधनों के साथ क्या कर सकता है। जैसे किसान यह भरोसा रखता है कि उसका खेत उससे कहीं अधिक उपज देगा जो उसने खेत में बोया है, वैसे ही हमारी सेवकाई केवल ''बीज बोने'' की है (9:6)। अच्छी उपज देना हमारे संसाधनों से नहीं बल्कि परमेश्वर के कारण होगा (9:10)।

जब यीशु के चेलों के सामने पांच हज़ार भूखे लोग थे तो वे यीशु के चुनौती से स्तब्ध रह गए थे कि ''तुम ही उन्हें खाने को दो'' (मरकुस 6:37)। उनके संसाधन स्पष्टतया इस महत्वपूर्ण काम के लिए अप्रयाप्त थे। परन्तु यीशु ने उन के नाचीज़ संसाधनों को लेकर भीड़ को फेर लिया। परिणाम यह हुआ कि ''और सब खाकर तृप्त हो गए'' (मरकुस 6:42)। उसके हाथों में सीमित संसाधन परमेश्वर के महिमा के लिए बढ़ गए थे। पौलुस कहता है कि हमारी सेवकाई के साथ भी ऐसा ही होता है। हम न केवल दूसरों की सेवा करते हैं बल्कि हमारा बलिदान फैल जाता है क्योंकि ''परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है'' (9:12)। परमेश्वर का अनुग्रह और होता है जब हम उसे जो हमारे पास है बांटते हैं (9:14)।

सारांश

धन पर लिखते और बोलते रहना ''अनावश्यक'' लग सकता है, पर पौलुस को मालूम था कि असली चेलों के बीच में इसका महत्व है। जब हम केवल कार्यक्रमों और बजटों की बात करते हैं तो हम उन सेवकाइयों को भूल जाते हैं कि हम, जो कुछ हमारे पास है उसे दूसरों को देकर ''अपने आपको देते'' हैं। जिस समय हम दूसरों के लिए बलिदान कर रहे होते हैं हम, यह भी दिखाते हैं कि हम ने अपने जीवनों की ''लगन'' और प्राथमिकता को पा लिया है।